॥ ६ - भैरवी महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

माँ त्रिपुर भैरवी

त्रिपुर भैरवी यन्त्र

॥ त्रिपुर भैरवी ॥

दस महाविद्याओं में त्रिपुर भैरवी माता छठी महाविद्या कहलाती हैं। क्षीयमान विश्वके अधिष्ठान दक्षिणामूर्ति कालभैरव हैं। उनकी शक्ति ही त्रिपुरभैरवी है। ये ललिता या महात्रिपुरसुन्दरी की रथवाहिनी हैं।

मत्स्यपुराण में इनके त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरीभैरवी, षट्कूटाभैरवी, कमलेश्वरीभैरवी, कामेश्वरीभैरवी, कोलेशभैरवी, रुद्रभैरवी, सिद्धिभैरवी, चैतन्यभैरवी तथा नित्याभैरवी आदि रूपों का वर्णन है। सिद्धिभैरवी उत्तराम्नाय पीठकी देवी हैं। नित्याभैरवी पश्चिमाम्नाय पीठ की देवी हैं, इनके उपासक स्वयं भगवान् शिव हैं। रुद्रभैरवी दक्षिणाम्नाय पीठ की देवी हैं। इनके उपासक भगवान् विष्णु हैं। त्रिपुरभैरवी के भैरव वटुक हैं।

माँ त्रिपुर भैरवी तमोगुण (उग्र) एवं रजोगुण (सौम्य) से परिपूर्ण हैं। इनके ध्यान का उल्लेख दुर्गासप्तशती के तीसरे अध्याय में महिषासुर-वधके प्रसंगमें हुआ है। इनका रंग लाल है। लाल वस्त्र पहनती है। माता की चार भुजाएं और तीन नेत्र हैं। माँ कंठ में मुंड माला धारण किये हुए हैं। स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप करती है। माँ ने अपने हाथ में जपमाल, पुस्तक, तथा अभय और वर नामक मुद्रा धारण किए हुए हैं। कमलासन पर विराजमान हैं। भगवान शिव की यह महाविद्याएँ सिद्धियाँ प्रदान करने वाली होती हैं।

यहाँ पर त्रिपुर-भैरवी को योगीश्वरी रूप में उमा बतलाया गया है। इन्होंने भगवान् शंकर को पतिरूप में प्राप्त करने के लिये कठोर तपस्या करने का दृढ़ निर्णय लिया था। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इनकी तपस्या को देखकर दंग रह गये। इससे सिद्ध होता है कि भगवान् शंकर की उपासना में निरत उमाका दृढ-निश्चयी स्वरूप ही त्रिपुर-भैरवी का परिचायक है।

इन्द्रियों पर विजय और सर्वत्र उत्कर्ष की प्राप्ति हेतु, संकटों से मुक्ति हेतु त्रिपुरभैरवी की उपासना का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। त्रिपुरभैरवी का मुख्य उपयोग घोर कर्म में होता है। त्रिपुरभैरवी की रात्रि का नाम कालरात्रि तथा भैरवका नाम कालभैरव है। रुद्रयामल एवं भैरवीकुलसर्वस्व में इनकी उपासना तथा कवच का उल्लेख मिलता है।

- मुख्य नाम : **त्रिपुर-भैरवी।**
- अन्य नाम : **चैतन्य भैरवी, नित्य भैरवी, भद्र भैरवी, श्मशान भैरवी, सिद्धि भैरवी, संपत-प्रदा भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, भुवनेश्वर भैरवी, कमलेश्वरी भैरवी, कौलेश्वर भैरवी, रुद्रभैरवी, तथा षटकुटा भैरवी आदि।**
- भैरव : **दक्षिणामूर्ति या वटुक भैरव।**
- भगवान के २४ अवतारों से सम्बद्ध : **भगवान बलराम अवतार।**
- कुल : **श्री कुल।**
- दिशा : **पूर्व।**
- स्वभाव : **सौम्य उग्र, तामसी गुण सम्पन्न।**
- कार्य : **विध्वंस या पञ्च तत्वों में विलीन करने की शक्ति।**
- शारीरिक वर्ण : **सौम्य स्वभाव में लाल, उग्र रूप में घोर काले वर्ण युक्त।**
- विशेषता : **सिद्धविद्या, मंगलदात्री।**

॥ त्रिपुर भैरवी माँ का मंत्र ॥

- मुंगे की माला से पंद्रह माला से जाप कर सकते हैं। जाप के नियम किसी जानकार से पूछें।
- नोट : भैरवी महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।

- मंत्र **हसैं हसकरी हसैं।**
- मंत्र **हसरैं हसकलरीं हसरौः। हसरैं हसकलरीं हसरोः॥**
- मंत्र **ह्रीं भैरवी क्लौं ह्रीं स्वाहाः।**
- देवी मंत्र **ॐ हसैं वर वरदाय मनोवांछितं सिद्धये ॐ।**
- देवी मुल मंत्र **ह्रीं भैरवी क्लौं ह्रीं स्वाहाः।**
  ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुंदरीयै नमः।
  मां के जाप द्वारा सभी कष्ट एवं संकटों का नाश होता है धन सम्पदा, सोभाग्य, शारीरिक सुख एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है।
- देवी साधना मंत्र **ॐ ह्रीं सर्वैश्वर्याकारिणी देव्यै नमो नमः।**
  मां के जाप द्वारा सुन्दर पति या पत्नी प्राप्ति, प्रेम विवाह, शीघ्र विवाह, प्रेम में सफलता के लिए यह देवी पूर्ण लाभ दायक हैं।
- सिद्ध भैरवी मंत्र **स्हैं स्हक्लीं स्हौं।**
- विध्वंसिनी भैरवी **हस्रैं हसस्त्री हस्रौं।**
- चैतन्य भैरवी मंत्र **स्हैं स्कल्ह्रीं स्हौं।**
- मंत्र **श्रीं ह्रीं क्लीं एं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएइलह्रीं हसकहलह्रीं संकलह्रीं सौः - - एं क्लीं ह्रीं श्रीं**
  इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप है। जप के पश्चात त्रिमधुर (घी, शहद, शक्कर) मिश्रित कनेर के पुष्पों से होम करना चाहिए।
  - कमल पुष्पों के होम से धन व संपदा प्राप्ति
  - दही के होम से उपद्रव नाश
  - लाजा के होम से राज्य प्राप्ति
  - कपूर, कुमकुम व कस्तूरी के होम से कामदेव से भी अधिक सौंदर्य की प्राप्ति
  - अंगूर के होम से वांछित सिद्धि व
  - तिल के होम से मनोभिलाषा पूर्ति व
  - गुग्गुल के होम से दुखों का नाश होता है।
  - कपूर के होमत्व से कवित्व शक्ति आती है।

॥ त्रिपुर भैरवी ध्यान एवं स्तुती ॥

ध्यानम्

उद्यद्भानु सहस्रकान्ति मरुण क्षौमां शिरोमालिकाम्,
रक्तालिप्त पयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रारविन्द श्रियमं,
देवीं बद्ध हिमांशु रक्त मुकुटां वन्दे समन्द स्थिताम् ॥

जप होम

दीक्षां प्राप्य जपेन्मंत्रं तत्त्वलक्षं नितेन्द्रियः ।
पुष्पैर्भानु सहस्त्राणि जुहुयाद्ब्रह्मवृक्षजैः ॥
उपरोक्त मन्त्र का दश लाख जप करने से पुरश्चरण पूर्ण होता है । और ढाक के फूलों से बारह हजार होम करना उचित रहता है ।

॥ त्रिपुर भैरवी स्तोत्रम् ॥

- स्तुत्याऽनया त्वां त्रिपुरे स्तोष्येऽभीष्टफलाप्तये ।
  यया व्रजन्ति तां लक्ष्मीं मनुजाः सुरपूजिताम् ॥ ॥ १ ॥

- ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपां ।
  जानन्ति नैव जगदादिमनादिमूर्त्तिम् ।
  तस्माद्वयं कुचनतां नवकुंकुमाभां ।
  स्थूलां स्तुमः सकलवांगमयमातृभूताम् ॥ ॥ २ ॥

- सद्यः समुद्यतसहस्रदिवाकराभां ।
  विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिन्हहस्ताम् ।
  नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मां ।
  त्वां हारभाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥ ॥ ३ ॥

- सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं ।
  जन्मान्तरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ।
  अन्योन्यभेदकलहाकुलमानसास्ते ।
  जानन्तिं किं जडधियस्तव रूप् मम्ब ॥ ॥ ४ ॥

- स्थूलां वदन्ति मुनयः श्रुतयो गृणन्ति ।
  सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवासमन्ये ।
  त्वां मूलमाहुस्परे वचसामधिवासमन्ये ।
  मन्यामहे वयमपारकृपाम्बुराशिम् ॥ ॥ ५ ॥

- चन्द्रावतंसकलितां शरदिन्दुशुभ्रां ।
  पंचाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्ति ।
  त्वां पुस्तकं जपवटीममृताढ्यकुम्भं ।
  व्याख्यांच हस्तकमलैर्द्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥ ॥ ६ ॥

- शम्भुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो ।
  विष्णुस्त्वमन्यकमलापरिबद्धदेहः ।
  पद्मोद्भवस्त्वमसि वागाधिवासभूमिः ।
  येषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ॥ ॥ ७ ॥

- आकुंच्य वायुमवजित्य च वैरिषट्क ।
  मालोक्य निश्चलधियो निजनासिकाग्रम् ।

ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकलावतंसं ।
तद्रुपमम्ब कृति तस्तरुणार्कमित्रम् ॥ ॥ ८ ॥

- त्वं प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं ।
  सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः ।
  सत्यं तदद्रितनये जगदेकमात् ।
  नोंचेदशेषजगतः स्थितिरेव न स्यात् ॥ ॥ ९ ॥

- पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां ।
  पीठे तवाम्ब कनकाचलगह्वरेषु ।
  गायन्ति सिद्धिवनिताः सह किन्नरीभि ।
  रास्वादितामृतरसारुणपद्मनेत्रा ॥ ॥१०॥

- विद्युद्विलासवपुषं श्रियमुद्वहन्तीं ।
  यान्तीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम् ।
  सौन्दर्यराशिकमलानि विकाशयन्तीं ।
  देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम् ॥ ॥१२॥

- आनन्दजन्म भवनं भवनं श्रुतीनां ।
  चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि।
  ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां ।
  सौभाग्य जन्म वसतीं त्रिपुरे यथावत् ॥ ॥१३॥

- सर्व्वार्थभावि भुवनं सृजतीन्दुरूपा ।
  या तद्बिर्भितत्त पुरनर्कतनुः स्वशक्त्या ।
  ब्रह्मात्मिका हरति तत् सकलं युगान्ते ।
  तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि ॥ ॥१४॥

- नारायणीति नरकार्णवतारिणीति ।
  गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति।
  ज्ञानप्रदेति नयनत्रयभूषितेति ।
  त्वामद्रिराजतनये विबुधा वदन्ति ॥ ॥१५॥

- ये स्तुवन्ति जगन्माता श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात् ।
  त्वामनुप्राप्य वाक्-सिद्धिं प्राप्नुयुस्ते परां गतिम् ॥ ॥१६॥

॥ इति श्री त्रिपुर भैरवी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ त्रिपुर भैरवी कवच - १ ॥

- **भैरवी कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः।**
  छन्दोऽनुष्टुब् देवता च भैरवी भयनाशिनी।
  धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः॥

भैरवी कवच के ऋषि सदाशिव, छन्द अनुष्टुप, देवता भयनाशिनी भैरवी और धर्मार्थ काम, मोक्ष की प्राप्ति के लिए इसका विनियोग कहा गया है।

- **हसरैं मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी।**
- **हसकलरीं नेत्रंच हसरौश्च ललाटकम्।**
- **कुमारी सर्व्वगात्रे च वाराही उत्तरे तथा।**
- **पूर्व्वे च वैष्णवी देवी इन्द्राणी मम दक्षिणे।**
- **दिग्विदिक्षु सर्व्वत्रैव भैरवी सर्व्वदावतु।**
- **इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्देविभैरवीम्।**
- **कल्पकोटिशतेनापि सिद्धिस्तस्य न जायते॥**

॥ श्री भैरवी कवचम् - २ ॥

- **श्री देव्युवाच**

भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया।
साम्प्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम्॥ ॥ १ ॥

- त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारणम्।
त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति॥ ॥ २ ॥

- **ईश्वर उवाच**

श्रुणु पार्वति वक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवल्लभे।
त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम्॥ ॥ ३ ॥

- पठित्वा धारयित्वेदं त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
जघान सकलान्दैत्यान् यधृत्वा मधुसूदनः॥ ॥ ४ ॥
- ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते यधृत्वाभीष्टदायकम्।
धनाधिपः कुबेरोऽपि वासवस्त्रिदशेश्वरः॥ ॥ ५ ॥
- यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी विभुः।
न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन॥ ॥ ६ ॥
- पुत्रेभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्चेन्मृत्युमाप्नुयात्।
ऋषिस्तु कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरेव च॥ ॥ ७ ॥
- विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः॥ ॥ ८ ॥
- अधरो बिन्दुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः।
भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गो बीजत्रयात्मकः॥ ॥ ९ ॥
- बालैषा मे शिरः पातु बिन्दुनादयुतापि सा।
भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका॥ ॥१०॥
- दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु।
कामबीजं सदा पातु घ्राणयुग्मं परावतु॥ ॥११॥
- सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा।
हस्रैं कण्ठं हसकलरी स्कन्धौ पातु हस्रौ भुजौ॥ ॥१२॥
- पञ्चमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु।
हृदयं हसकलीं वक्षः पातु हसौ स्तनौ मम॥ ॥१३॥
- पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम।
हस्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हसकलरीं सदा॥ ॥१४॥
- कुक्षिं पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा।
ऐंईंओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु॥ ॥१५॥

- हस्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हसकलह्रीं सदा।
  पातु हसौं करौ पातु षट्कूटा भैरवी मम॥ ॥१६॥
- सहस्रैं सक्थिनी पातु सहसकलरीं सदावतु।
  गुह्यदेशं हस्रौ पातु जनुनी भैरवी मम॥ ॥१७॥
- सम्पत्प्रदा सदा पातु हैं जङ्घे हसक्लीं पदौ।
  पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु॥ ॥१८॥
- हसैं मामवतु प्राच्यां हरक्लीं पावकेऽवतु।
  हसौं मे दक्षिणे पातु भैरवी चक्रसंस्थिता॥ ॥१९॥
- ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु निऋत्यां चक्रभैरवी।
  क्रीं क्रीं क्रीं पातु वायव्ये हूँ हूँ पातु सदोत्तरे॥ ॥२०॥
- ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु।
  ऊर्ध्वं प्रागुक्तबीजानि रक्षन्तु मामधःस्थले॥ ॥२१॥
- दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधारिणी।
  ॐ ह्रीं स्त्रीं हूँ फट् सा तारा सर्वत्र मां सदावतु॥ ॥२२॥
- सङ्ग्रामे कानने दुर्गे तोये तरङ्गदुस्तरे।
  खड्गकर्त्रिधरा सोग्रा सदा मां परिरक्षतु॥ ॥२३॥
- इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं महत्।
  त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥ ॥२४॥
- यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात्।
  स्पर्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः॥ ॥२५॥
- यः शत्रुभीतो रणकातरो वा भीतो वने वा सलिलालये वा।
  वादे सभायां प्रतिवादिनो वा रक्षःप्रकोपाद् ग्रहसकुलाद्वा॥ ॥२६॥
- प्रचण्डदण्डाक्षमनाच्च भीतो गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्रसाध्यात्।
  अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्रिसन्ध्यं स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च॥ ॥२७॥
- त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम्।
  विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि॥ ॥२८॥
- कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
  तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवन्ति कुसुमानि च॥ ॥२९॥
- लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भवने मुखे।
  एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीं पराम्।
  बालां वा प्रजपेद्विद्वान्दरिद्रो मृत्युमाप्नुयात्॥ ॥३०॥

॥ इति श्री रुद्रयामल देवीश्वर संवादे त्रैलोक्य विजयं नाम भैरवी कवचम् सम्पूर्णम्॥

॥ त्रिपुर भैरवी कवचम् - ३ ॥

समस्त जगत को वश में करने वाला एक दुर्लभ कवच-माँ त्रिपुर भैरवी कवच। त्रिपुर भैरवी की उपासना से सभी बंधन दूर हो जाते हैं। इनकी उपासना भव-बन्ध-मोचन कही जाती है। इनकी उपासना से व्यक्ति को सफलता एवं सर्वसंपदा की प्राप्ति होती है। शक्ति-साधना तथा भक्ति-मार्ग में किसी भी रुप में त्रिपुर भैरवी की उपासना फलदायक ही है, साधना द्वारा अहंकार का नाश होता है तब साधक में पूर्ण शिशुत्व का उदय हो जाता है, और माता, साधक के समक्ष प्रकट होती है। उनकी प्रसन्नता से साधक को सहज ही संपूर्ण अभीष्टों की प्राप्ति होती है।

- श्रीपार्वत्युवाच
  - देव-देव महा-देव, सर्व-शास्त्र-विशारद,
    कृपां कुरु जगन्नाथ, धर्मज्ञोऽसि महा-मते।
  - भैरवी या पुरा प्रोक्ता, विद्या त्रिपुर-पूर्विका।
    तस्यास्तु कवचं दिव्यं, मह्यं कफय तत्त्वतः।
  - तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा, जगाद् जगदीश्वरः।
    अद्भुतं कवचं देव्या, भैरव्या दिव्य-रुपि वै।

- ईश्वर उवाच
  - कथयामि महा-विद्या-कवचं सर्व-दुर्लभम्।
    श्रृणुष्व त्वं च विधिना, श्रुत्वा गोप्यं तवापि तत्॥ ॥ १ ॥
  - यस्याः प्रसादात् सकलं, बिभर्मि भुवन-त्रयम्।
    यस्याः सर्वं समुत्पन्नं, यस्यामद्यादि तिष्ठति॥ ॥ २ ॥
  - माता-पिता जगद्-धन्या, जगद्-ब्रह्म-स्वरुपिणी।
    सिद्धिदात्री च सिद्धास्या, ह्यसिद्धा दुष्टजन्तुषु॥ ॥ ३ ॥
  - सर्व-भूत-प्रियङ्करी, सर्व-भूत-स्वरुपिणी।
    ककारी पातु मां देवी, कामिनी काम-दायिनी॥ ॥ ४ ॥
  - एकारी पातु मां देवी, मूलाधार-स्वरुपिणी।
    ईकारी पातु मां देवी, भूरि-सर्व-सुख-प्रदा॥ ॥ ५ ॥
  - लकारी पातु मां देवी, इन्द्राणी-वर-वल्लभा।
    ह्रीं-कारी पातु मां देवी, सर्वदा शम्भु-सुन्दरी॥ ॥ ६ ॥
  - एतैर्वर्णैर्महा-माया, शाम्भवी पातु मस्तकम्।
    ककारे पातु मां देवी, शर्वाणी हर-गेहिनी॥ ॥ ७ ॥
  - मकारे पातु मां देवी, सर्व-पाप-प्रणाशिनी।
    ककारे पातु मां देवी, काम-रुप-धरा सदा॥ ॥ ८ ॥

- ककारे पातु मां देवी, शम्बरारि-प्रिया सदा ।
  पकारे पातु मां देवी, धरा-धरणि-रुप-धृक् ॥ ॥ ९ ॥
- ह्रीं-कारी पातु मां देवी, अकारार्द्ध-शरीरिणी ।
  एतैर्वर्णैर्महा-माया, काम-राहु-प्रियाऽवतु ॥ ॥१०॥
- मकारः पातु मां देवी, सावित्री सर्व-दायिनी ।
  ककारः पातु सर्वत्र, कलाम्बर-स्वरुपिणी ॥ ॥११॥
- लकारः पातु मां देवी, लक्ष्मीः सर्व-सुलक्षणा ।
  ह्रीं पातु मां तु सर्वत्र, देवी त्रि-भुवनेश्वरी ॥ ॥१२॥
- एतैर्वर्णैर्महा-माया, पातु शक्ति-स्वरुपिणी ।
  वाग्-भवं मस्तकं पातु, वदनं काम-राजिका ॥ ॥१३॥
- शक्ति-स्वरुपिणी पातु, हृदयं यन्त्र-सिद्धिदा ।
  सुन्दरी सर्वदा पातु, सुन्दरी परि-रक्षतु ॥ ॥१४॥
- रक्त-वर्णा सदा पातु, सुन्दरी सर्व-दायिनी ।
  नानालङ्कार-संयुक्ता, सुन्दरी पातु सर्वदा ॥ ॥१५॥
- सर्वाङ्ग-सुन्दरी पातु, सर्वत्र शिव-दायिनी ।
  जगदाह्लाद-जननी, शम्भु-रुपा च मां सदा ॥ ॥१६॥
- सर्व-मन्त्र-मयी पातु, सर्व-सौभाग्य-दायिनी ।
  सर्व-लक्ष्मी-मयी देवी, परमानन्द-दायिनी ॥ ॥१७॥
- पातु मां सर्वदा देवी, नाना-शङ्ख-निधिः शिवा ।
  पातु पद्म-निधिर्देवी, सर्वदा शिव-दायिनी ॥ ॥१८॥
- दक्षिणामूर्तिर्मां पातु, ऋषिः सर्वत्र मस्तके ।
  पंक्तिशऽछन्दः-स्वरुपा तु, मुखे पातु सुरेश्वरी ॥ ॥१९॥
- गन्धाष्टकात्मिका पातु, हृदयं शाङ्करी सदा ।
  सर्व-सम्मोहिनी पातु, पातु संक्षोभिणी सदा ॥ ॥२०॥
- सर्व-सिद्धि-प्रदा पातु, सर्वाकर्षण-कारिणी ।
  क्षोभिणी सर्वदा पातु, वशिनी सर्वदाऽवतु ॥ ॥२१॥
- आकर्षणी सदा पातु, सम्मोहिनी सर्वदाऽवतु ।
  रतिर्देवी सदा पातु, भगाङ्गा सर्वदाऽवतु ॥ ॥२२॥
- माहेश्वरी सदा पातु, कौमारी सदाऽवतु ।
  सर्वाह्लादन-करी मां, पातु सर्व-वशङ्करी ॥ ॥२३॥
- क्षेमङ्करी सदा पातु, सर्वाङ्ग-सुन्दरी तथा ।
  सर्वाङ्ग-युवतिः सर्वं, सर्व-सौभाग्य-दायिनी ॥ ॥२४॥

- वाग्-देवी सर्वदा पातु, वाणिनी सर्वदाऽवतु।
  वशिनी सर्वदा पातु, महा-सिद्धि-प्रदा सदा॥ ॥२५॥
- सर्व-विद्राविणी पातु, गण-नाथः सदाऽवतु।
  दुर्गा देवी सदा पातु, वटुकः सर्वदाऽवतु॥ ॥२६॥
- क्षेत्र-पालः सदा पातु, पातु चावीर-शान्तिका।
  अनन्तः सर्वदा पातु, वराहः सर्वदाऽवतु॥ ॥२७॥
- पृथिवी सर्वदा पातु, स्वर्ण-सिंहासनं तथा।
  रक्तामृतं च सततं, पातु मां सर्व-कालतः॥ ॥२८॥
- सुरार्णवः सदा पातु, कल्प-वृक्षः सदाऽवतु।
  श्वेतच्छत्रं सदा पातु, रक्त-दीपः सदाऽवतु॥ ॥२९॥
- नन्दनोद्यानं सततं, पातु मां सर्व-सिद्धये।
  दिक्-पालाः सर्वदा पान्तु, द्वन्द्वौघाः सकलास्तथा॥ ॥३०॥
- वाहनानि सदा पान्तु, अस्त्राणि पान्तु सर्वदा।
  शस्त्राणि सर्वदा पान्तु, योगिन्यः पान्तु सर्वदा॥ ॥३१॥
- सिद्धा सदा देवी, सर्व-सिद्धि-प्रदाऽवतु।
  सर्वाङ्ग-सुन्दरी देवी, सर्वदा पातु मां तथा॥ ॥३२॥
- आनन्द-रुपिणी देवी, चित्-स्वरुपां चिदात्मिका।
  सर्वदा सुन्दरी पातु, सुन्दरी भव-सुन्दरी॥ ॥३३॥
- पृथग् देवालये घोरे, सङ्कटे दुर्गमे गिरौ।
  अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि, पातु मां सुन्दरी सदा॥ ॥३४॥

- फल-श्रुति

  इदं कवचमित्युक्तो, मन्त्रोद्धारश्च पार्वति।
  य पठेत् प्रयतो भूत्वा, त्रि-सन्ध्यं नियतः शुचिः॥ ॥३५॥
- तस्य सर्वार्थ-सिद्धिः स्याद्, यद्यन्मनसि वर्तते।
  गोरोचना-कुंकुमेन, रक्त-चन्दनेन वा॥ ॥३६॥
- स्वयम्भू-कुसुमैः शुक्लैर्भूमि-पुत्रे शनौ सुरै।
  श्मशाने प्रान्तरे वाऽपि, शून्यागारे शिवालये॥ ॥३७॥
- स्व-शक्त्या गुरुणा मन्त्रं, पूजयित्वा कुमारिकाः।
  तन्मनुं पूजयित्वा च, गुरु-पंक्तिं तथैव च॥ ॥३८॥
- देव्यै बलिं निवेद्याथ, नर-मार्जार-शूकरैः।
  नकुलैर्महिषैर्मेषैः, पूजयित्वा विधानतः॥ ॥३९॥
- धृत्वा सुवर्ण-मध्यस्थं, कण्ठे वा दक्षिणे भुजे।
  सु-तिथौ शुभ-नक्षत्रे, सूर्यस्योदयने तथा॥ ॥४०॥

- धारयित्वा च कवचं, सर्व-सिद्धिं लभेन्नरः ॥ ॥४१॥
- कवचस्य च माहात्म्यं, नाहं वर्ष-शतैरपि ।
  शक्नोमि तु महेशानि ! वक्तुं तस्य फलं तु यत् ॥ ॥४२॥
- न दुर्भिक्ष-फलं तत्र, न चापि पीडनं तथा ।
  सर्व-विघ्न-प्रशमनं, सर्व-व्याधि-विनाशनम् ॥ ॥४३॥
- सर्व-रक्षा-करं जन्तोः, चतुर्वर्ग-फल-प्रदम् ।
  मन्त्रं प्राप्य विधानेन, पूजयेत् सततः सुधीः ॥ ॥४४॥
- तत्रापि दुर्लभं मन्ये, कवचं देव-रुपिणम् ॥ ॥४५॥
- गुरोः प्रसादमासाद्य, विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् ।
  तत्रापि कवचं दिव्यं, दुर्लभं भुवन-त्रयेऽपि ॥ ॥४६॥
- श्लोकं वास्तवमेकं वा, यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
  तस्य सर्वार्थ-सिद्धिः, स्याच्छङ्करेण प्रभाषितम् ॥ ॥४७॥
- गुरुर्देवो हरः साक्षात्, पत्नी तस्य च पार्वती ।
  अभेदेन यजेद् यस्तु, तस्य सिद्धिरदूरतः ॥ ॥४८॥

॥ इति श्री रुद्र-यामले भैरव-भैरवी-सम्वादे-श्रीत्रिपुर-भैरवी-कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री त्रिपुर भैरवी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

- श्रीदेव्युवाच

कैलासवासिन्भगवन्प्राणेश्वर कृपानिधे ।
भक्तवत्सल भैरव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ ॥ १ ॥

- **न श्रुतं देवदेवेश वद मां दीनवत्सल ।**

- श्रीशिव उवाच

शृणु प्रिये महागोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ ॥ २ ॥

- **भैरव्याः शुभदं सेव्यं सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।**
यस्यानुष्ठानमात्रेण किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ ॥ ३ ॥

- **ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना ।**
कार्य्या ब्राह्मी कामधेनुः सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ ॥ ४ ॥

- **त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्द्दिनी ।**
मोहघ्नी मालतीमाला महापातकनाशिनी ॥ ॥ ५ ॥

- **क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहूः ।**
त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी ॥ ॥ ६ ॥

- **देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी ।**
दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥ ॥ ७ ॥

- **लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा ।**
प्त्यङ्गिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी ॥ ॥ ८॥

- **प्रभावती गुणवती गणमाता गुहेश्वरी ।**
क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी ॥ ॥ ९ ॥

- **महामारी महामोहा महाक्रोधा महानदी ।**
महापातकसंहर्त्री महामोहप्रदायिनी ॥ ॥१०॥

- **विकराला महाकाला कालरूपा कलावती ।**
कपालखट्वाङ्गधरा खड्गखर्प्परधारिणी ॥ ॥११॥

- **कुमारी कुङ्कुमप्रीता कुङ्कुमारुणरञ्जिता ।**
कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्त्तिप्रदायिनी ॥ ॥१२॥

- नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी ।
  घर्घरा घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी ॥ ॥१३॥

- कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी ।
  किशोरी केशवप्रीता क्लेशसङ्घनिवारिणी ॥ ॥१४॥

- महोत्तमा महामत्ता महाविद्या महीमयी ।
  महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी ॥ ॥१५॥

- मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
  अट्टाट्टहासनिरता कङ्कणन्नूपुरधारिणी ॥ ॥१६॥

- दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका ।
  दनुजान्तकरी दुष्टा दुःखदारिद्र्यभञ्जिनी ॥ ॥१७॥

- दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा ।
  मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी ॥ ॥१८॥

- श्यामा श्यामतनुः शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी ।
  इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ ॥१९॥

- भैरव्या देवदेवेश्यास्तव प्रीत्यै सुरेश्वरि ।
  अप्रकाश्यमिदं गोप्यं पठनीयं प्रयत्नतः ॥ ॥२०॥

- देवीं ध्यात्वा सुरां पीत्वा मकारपञ्चकैः प्रिये ।
  पूजयेत्सततं भक्त्या पठेत्स्तोत्रमिदं शुभम् ॥ ॥२१॥

- षण्मासाभ्यंतरे सोऽपि गणनाथसमो भवेत् ।
  किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे ॥ ॥२२॥

- सर्वं जानासि सर्वज्ञे पुनर्मां परिपृच्छसि ।
  न देयं परशिष्येभ्यो निन्दकेभ्यो विशेषतः ॥ ॥२३॥

॥ इति श्री भैरव्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री डाकिनी स्तोत्रम् ॥

यह साधना अत्यंत प्राचीन है। इस साधना को करने का अधिकार तामसिक साधक को है अर्थात जो माँस मदिरा का सेवन करते हैं। सिद्ध होने पर इनके माध्यम से साधक किसी भी कार्य को सुगमता पूर्वक कर सकते है। यह क्षण मात्र में कार्य करती है। स्त्री वशीकरण, पुरुष वशीकरण, समाज के रावण, सूर्पनखा जैसे दुष्ट लोगो को दण्डित भी करती है। कार्यालयों में रुके हुए कार्य, प्रॉपर्टी के कार्य आदि को भी सुगमता से सम्पन कर देती है। यह साधना श्मशान के किनारे, सुनसान खण्डर, कुँए अथवा बावड़ी के पास, वीराने जंगल में सिद्ध की जाती है।

- आनन्दभैरवी उवाच **अथ वक्ष्ये महाकाल मूलपद्मविवेचनम्।**
  यत् कृत्वा अमरो भूत्वा वसेत् कालचतुष्टयम्॥ ॥ १ ॥
- **अथ षट्चक्रभेदार्थे भेदिनीशक्तिमाश्रयेत्।**
  छेदिनीं सर्वग्रन्थीनां योगिनीं समुपाश्रयेत्॥ ॥ २ ॥
- **तस्या मन्त्रान् प्रवक्ष्यामि येन सिद्धो भवेन्नरः।**
  आदौ शृणु महामन्त्रं भेदिन्याः परं मनुम्॥ ॥ ३ ॥
- **आदौ कालींसमुत्कृत्य ब्रह्ममन्त्रं ततः परम्।**
  देव्याः प्रणवमुद्धृत्य भेदनी तदनन्तरम्॥ ॥ ४ ॥
- **ततो हि मम गृह्णीयात् प्रापय द्वयमेव च।**
  चित्तचञ्चीशब्दान्ते मां रक्ष युग्ममेव च॥ ॥ ५ ॥
- **भेदिनी मम शब्दान्ते अकालमरणं हर।**
  हर युग्मं स्वं महापापं नमो नमोऽग्निजायया॥ ॥ ६ ॥
- **एतन्मन्त्रं जपेत्तत्र डाकिनीरक्षसि प्रभो।**
  आदौ प्रणवमुद्धृत्य ब्रह्ममन्त्रं ततः परम्॥ ॥ ७ ॥
- **शाम्भवीति ततश्चोक्त्वा ब्राह्मणीति पदं ततः।**
  मनोनिवेशं कुरुते तारयेति द्विधापदम्॥ ॥ ८ ॥
- **छेदिनीपदमुद्धृत्य मम मानसशब्दतः।**
  महान्धकारमुद्धृत्य छेदयेति द्विधापदम्॥ ॥ ९ ॥
- **स्वाहान्तं मनुमुद्धृत्य जपेन्मूलाम्बुजे सुधीः।**
  एतन्मन्त्रप्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः॥ ॥१०॥

- तथा स्त्रीयोगिनीमन्त्रं जपेत्तत्रैव शङ्कर ।
  ॐ घोररूपिणिपदं सर्वव्यापिनि शङ्कर ॥ ॥११॥

- महायोगिनि मे पापं शोकं रोगं हरेति च ।
  विपक्षं छेदयेत्युक्त्वा योगं मय्यर्पय द्वयम् ॥ ॥१२॥

- स्वाहान्तं मनुमुद्धृत्य जपाद्योगी भवेन्नरः ।
  खेचरत्वं समाप्नोति योगाभ्यासेन योगिराट् ॥ ॥१३॥

- डाकिनीं ब्रह्मणा युक्तां मूले ध्यात्वा पुनः पुनः ।
  जपेन्मन्त्रं सदायोगी ब्रह्ममन्त्रेण योगवित् ॥ ॥१४॥

- ब्रह्ममन्त्रं प्रवक्ष्यामि तज्जापेनापि योगिराट् ।
  ब्रह्ममन्त्रप्रसादेन जडो योगी न संशयः ॥ ॥१५॥

- प्रणवत्रयमुद्धृत्य दीर्घप्रणवयुग्मकम् ।
  तदन्ते प्रणवत्रीणि ब्रह्म ब्रह्म त्रयं त्रयम् ॥ ॥१६॥

- सर्वसिद्धिपदस्यान्ते पालयेति च मां पदम् ।
  सत्त्वं गुणो रक्ष रक्ष मायास्वाहापदं जपेत् ॥ ॥१७॥

- डाकिनीमन्त्रराजञ्च शृणुष्व परमेश्वर ।
  यज्जप्त्वा डाकिनी वश्या त्रैलोक्यस्थितिपालकाः ॥१८॥

- यो जपेत् डाकिनीमन्त्रं चैतन्या कुण्डली झटित् ।
  अनायासेन सिद्धिः स्यात् परमात्मप्रदर्शनम् ॥ ॥१९॥

- मायात्रयं समुद्धृत्य प्रणवैकं ततः परम् ।
  डाकिन्यन्ते महाशब्दं डाकिन्यम्बपदं ततः ॥ ॥२०॥

- पुनः प्रणवमुद्धृत्य मायात्रयं ततः परम् ।
  मम योगसिद्धिमन्ते साधयेति द्विधापदम् ॥ ॥२१॥

- मनुमुद्धृत्य देवेशि जपाद्योगी भवेज्जडः ।
  जप्त्वा सम्पूजयेन्मन्त्री पुरश्चरणसिद्धये ॥ ॥२२॥

- सर्वत्र चित्तसाम्येन द्रव्यादिविविधानि च ।
  पूजयित्वा मूलपद्मे चित्तोपकरणेन च ॥ ॥२३॥

- ततो मानसजापञ्च स्तोत्रञ्च कालिपावनम् ।
  पठित्वा योगिराट् भूत्वा वसेत् षट्चक्रवेश्मनि ॥ ॥२४॥

- शक्तियुक्तं विधिं यस्तु स्तौति नित्यं महेश्वर ।
  तस्यैव पालनार्थाय मम यन्त्रं महीतले ॥ ॥२५॥

- तत् स्तोत्रं शृणु योगार्थं सावधानावधारय ।
  एतत्स्तोत्रप्रसादेन महालयवशो भवेत् ॥ ॥२६॥

- ब्रह्माणं हंससङ्घायुतशरणवदावाहनं देववक्त्र।
  विद्यादानैकहेतुं तिमिचरनयनाग्नीन्दुफुल्लारविन्दम्
  वागीशं वाग्गतिस्थं मतिमतविमलं बालार्कं चारुवर्णम् ।
  डाकिन्यालिङ्गितं तं सुरनरवरदं भावयेन्मूलपद्मे ॥ ॥२७॥

- नित्यां ब्रह्मपरायणां सुखमयीं ध्यायेन्मुदा डाकिनी।
  रक्तां गच्छविमोहिनीं कुलपथे ज्ञानाकुलज्ञानिनीम् ।
  मूलाम्भोरुहमध्यदेशनिकटे भूविम्बमध्ये प्रभा।
  हेतुस्थां गतिमोहिनीं श्रुतिभुजां विद्यां भवाह्लादिनीम् ॥ ॥२८॥

- विद्यावास्तवमालया गलतलप्रालम्बशोभाकरा।
  ध्यात्वा मूलनिकेतने निजकुले यः स्तौति भक्त्या सुधीः ।
  नानाकारविकारसारकिरणां कर्त्री विधो योगिना।
  मुख्यां मुख्यजनस्थितां स्थितिमतिं सत्त्वाश्रितामाश्रये ॥ ॥२९॥

- या देवी नवडाकिनी स्वरमणी विज्ञानिनी मोहिनी ।
  मां पातु पिरयकामिनी भवविधेरानन्दसिन्धूद्भवा ।
  मे मूलं गुणभासिनी प्रचयतु श्रीः कीतीचक्रं हि मा।
  नित्या सिद्धिगुणोदया सुरदया श्रीसंज्ञया मोहिता ॥ ॥३०॥

- तन्मध्ये परमाकला कुलफला बाणप्रकाण्डाकरा
  राका राशषसादशा शशिघटा लोलामला कोमला ।
  सा माता नवमालिनी मम कुलं मूलाम्बुजं सर्वदा ।
  सा देवी लवराकिणी कलिफलोल्लासैकबीजान्तरा ॥ ॥३१॥

- धात्री धैर्यवती सती मधुमती विद्यावती भारती ।
  कल्याणी कुलकन्यकाधरनरारूपा हि सूक्ष्मास्पदा ।

मोक्षस्था स्थितिपूजिता स्थितिगता माता शुभा योगिना।
नौमि श्रीभविकाशयां शमनगां गीतोद्गतां गोपनाम् ॥ ॥३२॥

- कल्केशीं कुलपण्डितां कुलपथग्रन्थिक्रियाच्छेदिनी।
  नित्यां तां गुणपण्डितां प्रचपलां मालाशतार्कारुणाम् ।
  विद्यां चण्डगुणोदयां समुदयां त्रैलोक्यरक्षाक्षरा।
  ब्रह्मज्ञाननिवासिनीं सितशुभानन्दैकबीजोद्गताम् ॥ ॥३३॥

- गीतार्थानुभवपिरयां सकलया सिद्धप्रभापाटलाम् ।
  कामाख्यां प्रभजामि जन्मनिलयां हेतुपिरयां सत्क्रियाम् ।
  सिद्धौ साधनतत्परं परतरं साकाररूपायिताम् ॥ ॥३४॥

- ब्रह्मज्ञानं निदानं गुणनिधिनयनं कारणानन्दयानम् ।
  ब्रह्माणं ब्रह्मबीजं रजनिजयजनं यागकार्यानुरागम् ॥ ॥३५॥

- शोकातीतं विनीतं नरजलवचनं सर्वविद्याविधिज्ञम् ।
  सारात् सारं तरुं तं सकलतिमिरहं हंसगं पूजयामि ॥ ॥३६॥

- एतत्सम्बन्धमार्गं नवनवदलगं वेदवेदाङ्गविज्ञम् ।
  मूलाम्भोजप्रकाशं तरुणरविशशिप्रोन्नताकारसारम्॥ ॥३७॥

- भावाख्यं भावसिद्धं जयजयदविधिं ध्यानगम्यं
  पुराणम्पाराख्यं पारणायं परजनजनितं ब्रह्मरूपं भजामि ॥ ॥३८॥

- डाकिनीसहितं ब्रह्मध्यानं कृत्वा पठेत् स्तवम् ।
  पठनाद् धारणान्मन्त्री योगिनां सङ्गतिर्भवेत् ॥ ॥३९॥

- एतत्पठनमात्रेण महापातकनाशनम् ।
  एकरूपं जगन्नाथं विशालनयनाम्बुजम् ॥ ॥४०॥

- एवं ध्यात्वा पठेत् स्तोत्रं पठित्वा योगिराड् भवेत् ॥ ॥४१॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उत्तर तन्त्रे महातन्त्रोद्दीपने सिद्धमन्त्रप्रकरणे षट्चक्र सिद्धि साधने भैरव भैरवी संवादे डाकिनी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥